5. रहीम के दोहे

Date 1-7-2021
Page 57

* शब्दार्थ

तरूवर - वृक्ष
मुक्ताहार - मोतियों का हार
प्रकृति - स्वभाव
गति - स्थिति
दीनबंधु - गरीबों का भाई
उपकारी - दूसरों का भला करने वाला
पथी - राहगीर, मुसाफिर

पिक - कोयल
सरवर - तालाब
दीन - दरिद्र
भुजंग - साँप
पानी - जल / चमक
मिताई - मित्रता
बापुरो - बेचारा

आगत शब्द
रहीम (अरबी), गरीब (अरबी)

वर्तनी - वैभिन्य

पूर्व रूप	मानक रूप	पूर्व रूप	मानक रूप
सञ्चहि -	संचहि	बसन्त	- बसंत
उत्तम -	उत्तम	दीनबन्धु	- दीनबंधु

मौखिक

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजीए:

क किसके समान बड़ा होने को व्यर्थ कहा गया है?
→ खजूर के पेड़ के समान बड़ा होने को व्यर्थ कहा गया है।

ख कौआ और कोयल की पहचान किस ऋतु में होती है?
→ कौआ और कोयल की पहचान बसंत ऋतु में होती है।

ग टूटे हुए मुक्ताहार को जोड़ने को कवि ने किस संदर्भ में कहा है?
→ कवि ने ऐसा टूटे हुए संबंधों को जोड़ने के संदर्भ में कहा है।

Scanned with CamScanner

घ लोग प्राय: कैसा व्यक्तियों की उपेक्षा करते हैं?
→ लोग प्राय: गरीब व्यक्तियो की उपेक्षा करते हैं।

इ दोहों का सस्वर वाचन किजीए।

2 निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण किजिए:
तरुवर, कपूत, सूई, मनुष्य, प्रकृति, मुक्ताहार, कृष्ण, सुजन।

लिखित
1 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए:
क सज्जन व्यक्ति धन का संचय क्यों करते हैं?
→ सज्जन धन का संचय परोपकार के लिए करते हैं।

ख रहीम के अनुसार कौन लोग धन्य हैं?
→ रहीम के अनुसार दूसरो पर उपकार करने वाले लोग धन्य हैं।

ग व्यक्ति दीनबंधु के समान कब बन जाता है?
→ गरीब तथा असहाय लोगों कि मदद करके व्यक्ति दीनबंधु के समान बन जाता है।

घ कवि ने किनकी मित्रता को आदर्श माना है?
→ कवि ने कृष्ण और सुदामा की मित्रता को आदर्श माना है।

2 निम्नलिखित प्रश्नो के विस्तार से उत्तर लिखिए:
क छोटी से छोटी चीज का बड़ा महत्व है, कैसे?
→ प्रत्येक चीज का अपना महत्व है फिर चाहे वह चीज कितनी ही छोटी क्यों न हो। जैसे कपड़े सिलने के लिए सूई काम आती है, तलवार नहीं। अत: यहाँ छोटी सूई का महत्व है, बड़ी तलवार का नहीं।

ख बड़ा होने की सार्थकता किसमे है?

Scanned with CamScanner

→ कवि के अनुसार बड़ा होने की सार्थकता परोपकार में है। जो व्यक्ति दीन-दुखियों के हित के कार्य करता है, उसे ही 'बड़ा' कहा जा सकता है। गरीबों की सेवा करने वाला व्यक्ति महान है।

ग परोपकार को कवि ने किन उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है?
→ कवि ने परोपकार को पेड़ व तालाब के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है। पेड़ अपने फल स्वयं नहीं खाता, वह लोगों को फल प्रदान करता है। इसी प्रकार तालाब भी अपना पानी स्वयं नहीं पीता। अनेक जीव-जंतु तालाब के पानी से अपनी प्यास बुझाते हैं।

3 निम्नलिखित दोहों का भाव स्पष्ट कीजिए:
क भले-बुरे सब एक से, जौं लौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक-पिक, रितु बसंत के माहिं।
→ दिए गए दोहे का भाव यह है कि किसी के बाहरी रूप-रंग को देखकर उसके अच्छे या बुरे होने कि पहचान नहीं कि की जा सकती। जिस प्रकार ~~मनुष्य~~ कौआ और कोयल की पहचान उनकी वाणी से होती है, उसी प्रकार मनुष्य की वाणी और उसके आचरण के आधार पर ही उसे ~~अच्छा~~ अच्छा या बुरा कहा जा सकता है।

ख वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे को लगे ज्यों मेहँदी को रंग॥
→ दिए गए दोहे का भाव यह है कि परोपकारी के ~~साथ~~ साथ रहनेवाले लोग भी धन्य हैं। उनका कल्याण उसी प्रकार हो जाता है जिस प्रकार मेहँदी बाँटने वाले हाथों में मेहँदी अपने आप लग जाती है।

Scanned with CamScanner

ग जे गरीब पर हित करे, ते रहीम बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण-मिताई जोग।।

→ दिए गए दोहे का भाव यह है कि गरीबों की सेवा करने वाला व्यक्ति ही महान है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने गरीब सुदामा को अपना मित्र बनाया और मित्रता का रिश्ता निभाया और उसके कष्ट दूर ~~किये~~ किए।

Scanned with CamScanner